



স্বামীর ছাঁচে বিকশিত প্রতিভারা
বেগম রোকেয়া (২)

আকিমুন রহমান

‘নারীর স্বাবলম্বী হয়ে ওঠার কথাও রোকেয়া মাঝে মাঝে বলেন, তবে তা নেহাতই উত্তেজিত ভাষণমাত্র। নারীর স্বাবলম্বী হয়ে ওঠার চেয়ে তাঁর কাছে মূল্যবান বলে গণ্য হয় পতিপ্রভুর যোগ্য অর্ধাঙ্গিনী হয়ে ওঠার ব্যাপারটি।...যেহেতু সে তুষ্ট করে পুরুষতন্ত্রের সকল চাহিদা, তাই পুরুষতন্ত্র তাকে দেয় মহামহীয়সী অভিধা। এভাবে আসলে পুরুষতন্ত্র পালন করে নিজের জয়ন্তী উৎসব।’

পূর্বর্তী পর্বের পর থেকে...



যে নারী-শিক্ষার জন্য রোকেয়া এত উচ্চকণ্ঠ, তা সম্পর্কেও তাঁর ধারণা ও বিশ্বাস পুরুষতান্ত্রিক ধারণা ও বিশ্বাসেরই প্রতিধ্বনি ছাড়া আর কিছু নয়। তিনি বিশ্বাস করেন নারীর ভূমিকা বিষয়ক পুরুষতান্ত্রিক সকল বিধি নির্দেশ। প্রভুর যোগ্য ‘সহধর্মিনী’ হয়ে ওঠার জন্যই নারী শিক্ষার প্রয়োজন বলে তিনি বারংবার রটনা করেন। নারীর স্বাবলম্বী হয়ে ওঠার কথাও রোকেয়া মাঝে মাঝে বলেন, তবে তা নেহাতই উত্তেজিত ভাষণমাত্র। নারীর স্বাবলম্বী হয়ে ওঠার চেয়ে তার কাছে মূল্যবান বলে গণ্য হয় পতিপ্রভুর যোগ্য অর্ধাঙ্গিনী হয়ে ওঠার ব্যাপারটি। তাই নানাভাবে নারী শিক্ষার রোকেয়ার চারপাশের ‘নতুন আদম’ নারী সম্পর্কে ওই সময় পোষন করেছে যে বিশ্বাস, নারীর যেমন মুক্তি তারা চেয়েছে, রোকেয়াও চেয়েছেন তা-ই। তবে নতুন আদমের মধ্যে প্রথার বিরুদ্ধে ক্ষভ ও ক্রোধ নেই, রোকেয়ার

मध्ये ता प्रबलभावे आहे। तार कारण आशराफ पितृकुलर कौलन्येर मान रम्फार जन्य सामान्य लेखापडा शेखार सुयोगओ ना पाओयार वा निरम्फर थाकार पीडन सईते ह्येछे रोकैयाके, नतून आदमके नय। रोकैयार फ्फेओ शुधु ओईटुकुर जन्य। रोकैया फ्फुद क्किछु क्किछु कुप्रथार विरुद्धे, नतुवा तार जीवन प्रथानुगत्येरई आन्य नाम मात्र।

रोकैया मुक्ति चान अवरोधवासिनीर अन्कार जीवन थेके, किन्तु निजेके गभीर पर्दाय आवृत करे पुण्य सफ्फये आहे तार गभीर आग्रह। नतून आदमेर मतो तिनिओ विश्वास करेन नारीर वोरका परा दरकार, कारण -

कोन सम्प्रान्त महिलाई ईच्छा करेन ना ये ताँहार प्रति दर्शकबुन्द आकृष्ट ह्य।

नाना श्रेनीर पुरुषेर 'दृष्टि हईते' वा 'साधारणेर दृष्टि (Public gaze) हईते रम्फा पाईवार जन्य' नारीकेई निजेके आवृत करे राखार दायित्व पालन करते हवे। रोकैया पुरुषतन्त्रेर सङ्गे नाना भावे सफ्फि करेछेन नारीर कल्याणेर जन्य नय, नारी मुक्तिर लडाई अव्याहत राखार स्वारथे नय, करेछेन आरेकटि पुरुषेर तैरि करे दिये याओया प्रतिष्थानटिके बहल तवियते राखवार जन्य। रोकैयार लेखक ह्ये ओठाओ ताँर आतुविश्वासेर फल नय। पतिप्रभुर पृष्ठपोषकताय प्रभुर गौरव बुद्धिर जन्यई देखा याय सुप्तिशीलता।

आटाश बहर वयस थेके रोकैयाके नियन्त्रन करे एकटि शव, एकटि पुरुषेर शवदेह; जीवदशाय यार नाम ह्येछिल साखाओयात होसेन। ए प्रभु शुधु जीवदशाय रोकैयाके नियन्त्रन करेई तृष्ठ हते पारेनि; ताँर मृत्यु दीर्घकाल धरे रोकैया ये जीवन यापन करवे खुवई कौशले ता नियन्त्रणेर अति सुबन्दोवसुओ करे गेछे। ताँर मृत्युकाले रोकैया यौवनेर मध्याह्ने; आटाश बहर वयसे ताँके वैधव्य वरण करते ह्य। साखाओयाओ होसेन मृत्युवरण करेन १९०९-ए, तारपर रोकैयाके पाडि दिते ह्य प्राय दुई युग एवं ५१ (वा ५०) बहर वयसे १९०२-ए रोकैया मृत्युवरण करेन। एई दुई युग रोकैया जीवन काटान एकटि मृत पुरुषेर ठिक करे याओया अनुशासन अनुसारे। साखाओयाओ ताँर मृत्यु परवर्तीकाले तरुनी रोकैयार जीवन यापन प्रसंग निये वडोई भावित छिलेन बले जाना याय।

प्रभु भावित छिलेन तार मृत्युपर तार परिचारिकार आन्येर भार्याय परिणत ह्यार आशङ्काय। विधवा तरुनीटि मृत्यु पर्यन्त ताँर विधवा भार्या थेकेई ताँके महिमानीत करे चलुक - ए प्रभु मने प्राणे ताई चाय एवं सुकौशले रुद्ध करे देय रोकैयार अन्य कोन पुरुषेर सङ्गे स्वाभाविक जीवन यापनेर सकल पथ। विवाह कथनोई जीवनेर महा गुरुत्वपूर्ण कोन व्यापार बले गन्य हते पारे ना। एवं विवाह विषयक ये कोन सिद्धान्त नेयार अधिकार

ব্যক্তির নিজের। বৈধব্যের কালে রোকেয়াকে আবার বিবাহিত হতেই হবে এমন কোন কথা নেই, তবে হতে যে হবেই না এমন কোন ঐশ্বরিক বিধিও শুধু রোকেয়ার জন্য প্রস্তুত হতে পারে না। কিন্তু তার পতিপ্রভু শুধু রোকেয়ার জন্যই তৈরি করে রেখে যায় ‘পুতপবিত্র বৈধব্য জীবন’ অবশ্যাস্তাবী করে নেয়ার নানা বিধি।

প্রথম স্ত্রীর মৃত্যুর পর কন্যার বয়সীকে পুনর্বিবাহ করতে সাখাওয়াতের বাঁধে না, এবং এ কথা খুবই জোড় দিয়ে বলা যায় রোকেয়ার মৃত্যু হতো, তবে বৃদ্ধ বয়সে সেবা শুশ্রূষার প্রয়োজনে ‘অনন্যোপায়’ হয়ে সাখাওয়াৎ আবার বিবাহ না করে পেরে উঠতেন না। কিন্তু নিজের মৃত্যুর পরে হলেও তাঁর ‘সম্পত্তি’ অন্যের অধিকারে চলে যাবে - পতিপ্রভু এ চিন্তাও মনে ঠাঁই দিতে পারে না। সে তাই রোকেয়ার সামনে ঝুলোয় মহীয়সী হবার নানা মূলো, আর রোকেয়া মৃত্যুকাল পর্যন্ত অতি সুখের সঙ্গে পালন করে চলে পতিপ্রভুর তৈরী করে যাওয়া সব বিধি। যেহেতু সে তুষ্ট করে পুরুষতন্ত্রের সকল চাহিদা, তাই পুরুষতন্ত্র তাকে দেয় মহামহীয়সী অভিধা। এভাবে আসলে পুরুষতন্ত্র পালন করে নিজের জয়ন্তী উৎসব। কেননা মৃত পুরুষের এমন আধিপত্য ও নিয়ন্ত্রণ রোকেয়ার জীবনে ছাড়া কোথাও দেখা যায় না।

(চলবে)